लोकतंत्र और आर्थिक विकास

Dr.Vini Sharma

Introduction

लोकतंत्र

लोकतंत्र और विकास

(1) उपनिवेशकाल के बाद के समाजों में लोकतंत्र और विकास

(2) भारत में राजनीतिक लोकतंत्र और आर्थिक विकास (1947 - 1967)

(3) 1967 - 1990

(4) 1990 के दशक और आगे

- बदलते हुए भारत में - भारतीय राजनीतिक के चिकांश पुराने विश्वास धीरे - धीरे समाप्त हो रहे हैं।

लेकिन

- लोकतंत्र का विचार :- निरन्तर शक्तिशाली बन रहा है।

(एशिया और अफ्रीका के देश एक ही उपनिवेशी शक्ति का शिकार थे, उपनिवेशवाद के बाद इन देशों विशेषकर (पाकिस्त
जो भूमंडलीयकरण, स्थानीकरण के बाद भी लोकतंत्र को कायम रखने के लिए प्रयासरत है।)

|

|_ यह कोई औसत उपलब्धि नहीं माना जा सकता।

* भारत विश्व का विशालतम और सर्वाधिक विविधतापूर्ण लोकतंत्र हैं।

*** भारत को उदारवादी लोकतंत्र बनाने की राह में निम्नलिखित कमियां थी -**

- साक्षरता
- उद्योगीकरण और लोकतांत्रिक चेतना निम्न स्तर पर
- सदियों पुरानी परम्परागत सामाजिक व्यवस्था
- राजनीतिक समानता का विरोध
- सांस्कृतिक और आर्थिक विशिष्टताओं के रूप में विभाजन।

* भारत में लोकतंत्र की स्थापना :-

- 20वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा (लोकतांत्रिक संस्थाओं के रूप में)

- परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों से :- जैसे - बहुवाद, सामंजस्य, सहिष्णुता, अन्तर्वेशन तथा समायोजन?

भारत में लोकतंत्र महत्वपूर्ण रूप से उपनिवेशी (ब्रिटिश सरकार के द्वारा ही)

|_ 1909, 1919,1935 के अधिनियम

|_ मतदान अधिकार

|_ संस्थाएँ

* महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत के राजनीतिक मे विशाल विविधता की पहचान और समायोजन लिए राष्ट्र - राज्य उत्तरदायित्व पर जोर दिया।

* भारतीय लोकतंत्र का अपने क्रियाविधि रूप में बहुवादी स्वरूप :- संघवाद / तीन भाषा नीति / भाषाई आधार पर राज्यों पुनर्गठन आदि लागू करना।

Note - इस प्रकार भारत में लोकतंत्र की जड़े गहरे तक बैठी हुई है।

भारत में संसद / अदालतों और स्वतंत्रत मीडिया का अस्तित्व बना हुआ है।

लोकतंत्र की समझ

* लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें जनता को प्रभुसत्ता का अंतिम स्त्रोत / स्वयं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शासन भाग ले।

- संकल्पना के स्तर पर :- लोकतंत्र एक आदर्श है,

लेकिन

- आदर्श लोकतंत्र है क्या? आदर्श लोकतंत्र की क्या परिभाषा हैं?

* इसका इतिहास में कही भी अस्तित्व नहीं रहा।

ना आज कही अस्तित्व हैं।

* बस ज्यादा से ज्यादा यह कह दिया जाता है कि :-

* लोकतंत्र के आदर्श के अधिकाधिक समीप पहुंचने के प्रत्यत्न किए गए हैं या किए जा रहे हैं।

* लोकतंत्र का निरंतर विकास हो रहा है।

* दिन - प्रतिदिन आदर्श के निकट पहुंचने के लिए प्रयत्नशील है।

* इत्यादि।

- विश्व में लोकतंत्र का इतिहास :-

(1) यूनानी नगर - राज्यों में :- लोकतंत्र में दासता की प्रथा मान्यता प्राप्त थी।

दासों और स्त्रियों को नागरिकता के अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

(2) ब्रिटेन का संसदीय लोकतंत्र :- 19वीं शताब्दी में मध्यम वर्गीय उप - समाज के मूल्यों पर आधारित था और उद्भव एव विकास आम जनता के अधिकारों के आधार पर नहीं था।

Note - तो किसी देश की व्यवस्था लोकतंत्रात्मक है या नहीं इसका निर्णय किस कसौटी पर किया जाए?

* यह एक कठिन प्रश्न हैं, क्योंकि लोकतंत्र के अनेक अर्थ है और अनेक रूप है।

* इसे किसी परिभाषा की परिधि में बाँधना संभव नहीं।

=> लोकतंत्र की धारणा के संबंध में इस अस्पष्टता को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि लोकतंत्र केवल शास प्रणाली ही नहीं बल्कि जीवन - यापन का एक विशिष्ट ढंग है।

ब्रिटेन के प्रसिद्ध विचारक :-

हेरल्ड लास्की :- सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के अभाव में राजनीतिक लोकतंत्र एक मृग - मरीचिका हैं।

विधि शास्त्री ए. वी. डायसी :- " प्रजातंत्र एक सरकार नहीं, बल्कि एक समाज होता है।

* इस प्रकार यह स्पष्ट है कि लोकतंत्र की सफलता के लिए लोकतांत्रिक समाज का होना आवश्यक है।

(इस प्रकार लोकतंत्रीय राजनीतिक व्यवस्था में जनता की इच्छा की सर्वोच्चता, जनता द्वारा चुनी हुई प्रतिनिधि सरकार, नि
तथा आवधिक चुनाव, वयस्क मताधिकार, उत्तरदायी सीमित तथा संवैधानिक सरकार, सरकार के हाथ में राजनीतिक शक्ति
जनता की अमानता के रूप में, सरकार के निर्णयों में सलाह, दबाव तथा जनमत के द्वारा जनता का हिस्सा, जनता के
अधिकारों एवं स्वतंत्रता की हिफाजत में सरकार का कर्तव्य, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायालय, कानून का शासन, विभिन्न
राजनीतिक दलों तथा हितों समूहों को उपस्थित विशेषता मानी जाती है।)

लोकतंत्र और विकास

* लोकतंत्र एक सजीव संकल्पना हैं।

* यह कोई गतिहीन धारणा नहीं

विकास

* विकास के संदर्भ में राष्ट्रों की प्राय : तीन श्रेणियां :-

|_ विकसित राष्ट्र

|_ विकासशील राष्ट्र

|_ अल्पविकसित राष्ट्र

(इस श्रेणी विभाजन का आधार हैं :- आर्थिक विकास का स्तर / और उसकी गति)

लोकतंत्र

यह श्रेणी विभाजन लोकतंत्र के संदर्भ में भी लागू हो सकता है,

|_ विकसित लोकतंत्र

|_ विकासशील लोकतंत्र

|_ अल्पविकसित लोकतंत्र

(इस श्रेणी का आधार :- लोकतंत्र के विकास का स्तर / और गति)

लोकतंत्र की संकल्पना की भांति ही विकास की संकल्पना :-

लोकतंत्र की संकल्पना की भांति ही विकास की संकल्पना :-

भी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलू है।

विकास :- विकास के लिए किसी न किसी प्रकार का सुव्यवस्थित आयोजन अनिवार्य है।

:- इसके लिए आवश्यक है कि उपलब्ध संसाधनों तथा विकास की आवश्यकताओं के बीच तालमेल बिठाया जाए।

* विकास सदैव और सभी समाजों में एक गतिशील प्रक्रिया हैं।

* प्रत्येक देश में कुछ न कुछ विकास होता रहता है।

* प्रत्येक देश में कुछ न कुछ विकास होता रहता है।

(लेकिन जिस प्रकार एक व्यक्ति अपने जीवन और भविष्य के लिए स्वयं मेहनत करता है उसी प्रकार एक राष्ट्र को भ
अपने विकास की राह चुनना पड़ता है।)

- आज सभी प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ योजनाबद्ध विकास के कार्यक्रमों में लगे हैं

|_ चाहे वे पूँजीवादी हो

|_ या समाजवादी

|_ या कोई और

-आर्थिक दृष्टि से अल्प - विकसित और विकासशील देशों में -> तीव्र विकास की आवश्यकता का महत्व अधिक है

- इसके आगे बाकी विचार गौण है।

लोकतंत्र और विकास

लोकतंत्र और विकास दोनों के आदर्श सभी देश - कालों में उचित माने जाते हैं।

- पूर्ण रूप से **विकसित राष्ट्र** या पूर्ण रूप से ***विकसित लोकतंत्र***

कल्पना मात्र है

- आज प्राय : सभी प्रत्येक समाज या राष्ट्र राजनीतिक एवं आर्थिक विकास की किसी न किसी अवस्था से गुजर रहा

by PowerDirector

- प्रत्येक देश की अपनी विकासशील अर्थव्यवस्था है।

- विकासशील लोकतांत्रात्मक संगठन है।

- योजना का महत्व :- योजनाबद्ध लोकतंत्र

योजनाबद्ध विकास

(दोनों के लिए आवश्यक)

* डॉ. सुभाष कश्यप के अनुसार :-

*** लोकतंत्र और विकास :-** दोनों के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अर्थ है।

* इसलिए लोकतंत्र और विकास दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

यदि

लोकतंत्र का अभिप्राय :- संघ बनाने की स्वतंत्रता है।

शासन मे भाग लेने का अधिकार है।

ता

विकास का अभिप्राय :- संघ बनाने की स्वतंत्रता।

विकास कार्यों में भाग लेने का अधिकार।

(यानी संघ बनाने की स्वतंत्रता का केवल यह अभिप्राय नहीं है कि व्यक्ति एक - दूसरे से मिल - जुल सकें, इस का य
अभिप्राय है कि प्रत्येक नागरिक समूचे राष्ट्र के विकास की समस्याओं और संभावनाओं में भाग ले।)

लोकतंत्र को सार्थक बनाने के लिए आवश्यक है :-

- कि आर्थिक और सामाजिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

- प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सके।

- हर किसी को कुछ व्यक्तिगत संतुष्टि का अनुभव हो।

- लोगों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता मिले।

- व्यक्तिगत प्रतिभाओं को निखारने का अवसर मिले।

आर्थिक विकास का अंतिम लक्ष्य :-

- मानव सुख में वृद्धि करना

- यदि मानव आत्मा बंधनों में जकड़ी है,

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं है,

- शासक, शासन प्रणाली, समाज व्यवस्था को चुनने का अधिकार नहीं है।

:- शरीर को रोटी और पानी की पूर्ति अपने आप में पर्याप्त नहीं हैं।

:- शरीर को रोटी और पानी की पूर्ति अपने आप में पर्याप्त नहीं हैं।

अर्थात

हम लोकतंत्र के माध्यम से ही सच्चे विकास की राह तैयार कर सकते हैं।

हम विकास के माध्यम से ही लोकतंत्र की राह तैयार कर सकते हैं।

(लोकतंत्र और विकास बारी - बारी से एक - दूसरे के साध्य और साधन)

* असंतुलित आर्थिक विकास था

|_ इससे अमीर और गरीब के बीच दूरी बढ़ी।

|_ इससे लोकतंत्र की अपेक्षा सत्तावाद की स्थापना।

|_ इस दुश्चक्र से बाहर निकलने का मार्ग ढूंढने की चुनौती।

|_ यह अभी तक विद्यमान है।

* उपनिवेशकाल के समाज बहुसांस्कृतिक थे ओर जातीय एवं प्रजातिय संघर्ष होते रहते थे।

|_ यह कहना गलत होगा कि लोकतंत्र केवल उच्च आर्थिक विकास वाले देशों में ही संभव है।

|_ निम्न आर्थिक विकास के उदाहरण -

|_ भारत, श्रीलंका, जमैका और वोत्सना

|_ इन देशों ने लोकतंत्रिक व्यवस्था को कायम रखा

|_ इन देशों को सामाजिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए

|_ सतत आर्थिक विकास नीतियों को जारी रखना चाहिए

|_ सतत आर्थिक विकास नीतियों को जारी रखना चाहिए

|_ ताकि समाज के सभी वर्गों को लाभ मिले

|_ और संघर्ष कम हो

|_ और आर्थिक विकास तथा लोकतंत्र के लिए स्वस्थ वातावरण बने।